पीछे छूटते लोग
इमतियाज गदर
सृष्टि

अपनी बात

आज जिस ओर दृष्टि दौड़ाइए, उस ओर अफरा-तफरी का आलम नजर आता है। लोग चलते नहीं बल्कि दौड़ते नजर आते हैं। जिंदगी विद्युत गति से आगे की ओर बढ़ रही है। आज प्रत्येक व्यक्ति कम वक्त की कमी का रोना रोता हुआ दिखाई देता है।

आज अधिकतर लोगों का समय इंटरनेट के विभिन्न प्लेटफार्म यथा फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप इत्यादि में व्यस्त रहने में गुजर रहा है। इनमें से ट्विटर ने कम से कम शब्दों में अपने विचार को दूसरों तक पहुंचाने में एक अच्छा-खासा स्थान प्राप्त कर लिया हैं। लगभग एक सौ चालीस शब्दों के सीमा में रहकर लोग बड़ी से बड़ी बात कहने में लग गए हैं।

इस आधुनिक दौर में हिंदी साहित्य की अन्य विधाओं के साथ-साथ लघुकथा ने भी अपनी अहमियत को मनवाने में सफलता अर्जित की है। कम शब्दों में जीवन के विभिन्न वास्तविकताओं से रूबरू कराने में लघु कथा ने हिंदी साहित्य में ट्विटर की शक्ल में अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफलता अर्जित की है।

अब मैं अपने लघुकथा संग्रह "पीछे छूटते लोग" को लेकर आप प्रबुद्ध जनों के समक्ष प्रस्तुत हुआ हूँ। इसमें मैं कहाँ तक सफल हुआ हूँ, इसका फैसला तो हिंदी साहित्य के आप प्रबुद्ध जन ही करेंगे। हमें आशा है कि मेरी प्रत्येक लघु कथा आपको एक क्षण भर सोचने के लिए अवश्य मजबूर करेगी।

आप सबकी शुभकामनाओं एवं बहुमूल्य विचारों की आशा में........

आपका

इम्तियाज गदर

क्रम संख्या

1. अमर प्रेम की दुर्दशा
2. पेंशन
3. तृप्ति
4. विश्वास के पर्दे में गुनाह
5. इच्छा
6. चिंता
7. यह कैसी उदारता
8. डायलर टोन
9. एग्जामनी इज ग्रेटर दैन एग्जामिनर
10. अतिथि की बुद्धिमता
11. मिस कॉल
12. दोहरे मापदंड
13. देसी संस्कार
14. मां-मां में अंतर
15. हज कुबूल
16. रोटी की तलाश में
17. रेड लाइट एरिया
18. यह कैसी रहम दिली
19. झंडा चौक
20. शिकारी की चालाकी
21. असहाय की सहायता
22. मोक्ष
23. नेशनल गेम
24. अल मोमिनीन

25. हेडफोन
26. चूड़ी वाली
27. सर चढ़े ईमानदार
28. एडजस्ट
29. फेसबुक
30. प्रतिबिंब में बचपन
31. सयाना बेटा
32. गोद में पलता भिखारी
33. शुभ बलिदान
34. गूगल
35. चीरहरण
36. अधिकार पर डाका
37. आत्मा की चित्कार
38. नोटा बटन
39. अमेरिका की बराबरी
40. असल पाठ
41. हर शाख पर उल्लू
42. पलायन
43. जिंदगी लय पर
44. पंडित मौलवी
45. बेड इफेक्ट
46. बहू के सास होने तक
47. सुलभ चिकित्सा
48. भाव
49. भिखारी की माफी
50. सांठ-गांठ
51. पहले इंसान

52. भड़ुवा
53. दूसरे का हक
54. साहित्य की आड़ में
55. प्रेत आत्माएं
56. घर जवांई
57. मोबाइल गेम
58. हेल्प नंबर
59. संयम
60. शहीद अमर रहे
61. आदर्शवादी
62. अस्तित्व से लड़ाई
63. शक
64. साथ रहने की सजा
65. तुच्छ संबोधन
66. और बिल पारित हो गया
67. हिम्मतवाला
68. एक और शहंशाह का वायदा
69. ज़ेबरा क्रासिंग
70. जातिसूचक
71. नेता की रणनीति
72. रेफर
73. लापरवाही किसकी
74. अपंग शहर
75. एक रोटी कम
76. पग-पग कांटे
77. नशे की राह
78. हत्यारे

79. बदला
80. ईमानदारी का पाठ
81. दो फीट जमीन
82. बेगुनाह मुजरिम
83. सफाईवाला
84. तत्काल टिकट
85. जमानत
86. एक मजदूर की विदाई
87. लूट की परंपरा
88. माफिया
89. ऑनर किलिंग
90. मृत्यु तो तय है पर
91. करोड़पति बनते-बनते
92. नो कमेंट
93. तुम सयाने तो हम भी सयाने
94. हमें अपनों ने लूटा
95. आप करे तो पुण्य, हम करे तो पाप
96. चोर-चोर राजनीतिक भाई
97. कुत्तों वाला काम
98. लचर कानून का शिकार
99. नौकर की हैसियत
100. एक टुकड़े के लिए
101. रुग्ण मानसिकता
102. ओल्ड वर्शन
103. निन्यानवा शिकार
104. बेटी और धन
105. साइबर अपराधी

106. नेता होने का अर्थ

107.ग्राउंड जीरो से लाइव

108.बराबरी वाले

109.रीएडमिशन

110.लाइव सुसाइड

111.समाधि

112.हार्ट अटैक

113.बोए कोई,काटे कोई और

114.गरीबों की हाय

115.अनपढ़ से पाला

116.मिथक के बहाने

117.जेब कतरे

118.संतुलन

119.प्रकृति की इच्छा

120.सजा

121.शोषण का अनोखा तरीका

122.मुखिया जी

123.वफादार भी कुत्ता

124.गौ माता के नाफरमान बेटे

125.कथनी और करनी में अंतर

126.ब्यूटी पार्लर वाली मां

अमर प्रेम की दुर्दशा

प्रेम में वशीभूत होकर लड़का-लड़की ने एक साथ आत्महत्या कर ली। फिर उनकी आत्माओं ने यह निर्णय किया कि चलो देखते हैं कि हमारे प्रेम में प्राण गंवाने पर घर, मुहल्ले तथा यार दोस्तों में किस प्रकार की प्रतिक्रिया हो रही है। लोग हमें लैला-मजनू या दूसरे अमर प्रेमियों की तरह न सही, एक सच्चे प्रेमी की तरह तो जरूर याद करते होंगे।

लड़की के घरवाले- करम जली ने समाज में नाक कटवा दी। अच्छा होता जन्म लेते ही मर जाती। पूरे परिवार को कहीं मुंह दिखाने योग्य नहीं रखा।

लड़के के घरवाले- बिरादरी में थूथू हो रही है। चला था नीच कुल की लड़की को इस घर की बहू बनाने। नस्ल खराब करने से पहले मर गया, अच्छा हुआ

लड़के के मित्र-- यार, लड़की तो ठीक फंसाया था। टाइम पास करता, फिर छोड़ देता। एक के लिए जान देने की क्या जरूरत थी।

लड़की की सहेलियां- उच्च कुल में जाने का उसका सपना अधूरा ही रह गया। बड़ी सोच-समझकर उसने लड़का फंसाया था

दोनों आत्माओं ने सोचा-- काश! हम आत्महत्या नहीं करते और जीवित रहते हुए साथ-साथ रहकर यह दिखा देते कि हम सच्चे प्रेमी हैं।